• अनुभूति और अभिव्यंजना के निकष पर परशुराम शुक्ल का बाल कथा साहित्य

राँची विश्वविद्यालय, राँची की पीएच.डी उपाधि के निमित्त शोध सारांश

सत्र : २०२३- २०२४

मानविकी संकाय

हिंदी विभाग

राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोध निर्देशक :

डॉ. जितेन्द्र कुमार सिंह

सहायक प्रोफेसर

स्नातकोत्तर हिंदी विभाग

राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोधकर्ता :

अन्नू शर्मा

अनुभूति और अभिव्यंजना के निकष पर परशुराम शुक्ल का बाल कथा साहित्य

भूमिका :-

शोध विषय का चयन :

भारत सरकार ने नई शिक्षा नीति – २०२० के माध्यम से शिक्षा में अभुतपूर्व बदलाव कर रही है। इसके अंतर्गत स्कूली शिक्षा प्रणाली को ५+३+३+४ के रूप में बदल दिया गया है। इसमें पहले ५ वर्ष अर्ली स्कूलिंग के होंगे। इसे अर्ली चाइल्डडुड पालिसी का नाम दिया गया है। जिसमें तीन साल के बच्चों को भी स्कूली शिक्षा के अंतर्गत शामिल किया गया है। इन बच्चों को शुरूआती पांच सालों तक मातृभाषा में शिक्षा देने का फैसला किया गया है। इसलिए इनके पढ़ाने के तरीकों में बदलाव तय है। शोध का विषय चयन करते हुए लगा कि हिंदी बाल साहित्य इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। पांच से बारह साल के बच्चों को इनके माध्यम से बड़ी से बड़ी बात भी आसानी से समझाया जा सकता है। क्या इस महत्वपूर्ण जिम्मेदारी के लिए हमारा बाल साहित्य भी तैयार हैं, उसकी क्या प्रवृतियां रही है। इसलिए मेरे मन में बाल साहित्य का प्रवृत्तिमूलक अनुशीलन पर शोध करने का विचार आया।

शोध विषय का संक्षिप्त परिचय :-

बाल साहित्य पर विचार करते हुए इसका अर्थ गवेषण करने से स्पष्ट होता है कि जो साहित्य बालकों के लिए लिखा जाता है , वह बाल साहित्य है।

यह ऐसा साहित्य होता है जो समाज और देश के भावी निर्माता होता है। इस दृष्टि से अर्थ गाम्भीर्य और भी बढ़ जाता है। बाल साहित्य की उपादेयता आज के तकनीकी युग में बढ़ रही है ऐसा इसलिए क्योंकि तकनीकी ने बच्चों के जीवन में बाल साहित्य के लिए गुंजाइश तथा स्पेस को कम कर दिया है। एक ऐसे दौर में जब बच्चे कुछ ही वर्ष के होते ही स्मार्ट फोन, लैपटॉप जैसी युक्तियों से सुपरिचित हो जाते हैं तथा इन्हें चलाने की कला सीख लेते हैं। ऐसे में जरूरी हो जाता है कि उन्हें किस्से, कहानियों, कविताओं तथा छंदों से जोड़े रखा जाए। इसमें बाल साहित्यकारों की भूमिका बढ़ जाती है।

हिंदी बाल साहित्य एक विस्तृत क्षेत्र है। जिसका देश में शानदार इतिहास और वर्तमान रहा है। डॉ. परशुराम शुक्ल आधुनिक काल में बाल साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर रहे हैं। बचपन से इनकी रचनाएं पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से हम सभी पढ़ते आ रहे हैं। खासतौर पर इनके बाल साहित्य जिसमें सिर्फ बिल्ली, चूहा,शेर,बाघ जैसे जानवर के माध्यम से संवाद संप्रेषण नहीं करता है। उनके बाल साहित्य में वैज्ञानिकता की झलक भी देखने को मिलती है। जिसके माध्यम से छोट- छोट बच्चों के मन में बाल्यकाल से ही कम्प्यूटर, रोबोट वैज्ञानिक शब्द उत्सुकता पैदा करते हैं। जानकारी जुटाने पर पता चला कि पत्र-पत्रिकाओं के अलावे डॉ. शुक्ल की अबतक बाल साहित्य में सौ से अधिक किताबें प्रकाशित हो चुकी है।

किताबों को पढ़ने पर मुझे लगा कि इनकी रचनाएं हिन्दी बाल साहित्य की प्रवृत्तियों को समझने के लिए एक दस्तावेज की तरह है। जिसका उपयोग मैं अपने शोध में कर सकती हूं।

शोध विषय का उद्देश्य :-

हाल के वर्षो में मीडिया और मोबाइल का लोगों पर बढ़ते प्रभाव ने बाल साहित्य को थोड़ा परेशानी में डाल दिया है। इन माध्यमों की वजह से बालपन की कोमलता भी खत्म हो रही है। बाल साहित्य में शानदार रचनाएं मौजूद है, लेकिन माता पिता और बच्चें मीडिया और मोबाइल में ज्यादा उलझ कर रह गये है। जिसका दुष्परिणाम भी देखने को मिल रहा है। इन जगहों पर बालकों के लिए उपलब्ध ज्यादातर सामग्री बच्चों की स्वतंत्रता और विचारधारा का सम्मान नहीं करते। इन्हें जिस अच्छे मनोवैज्ञानिक साहित्य और व्यवहार की आवश्यकता है उसका अभाव दिखता है। पंचतंत्र से लेकर आधुनिक काल के हिंदी साहित्य में बाल साहित्य की प्रवृत्तिमूल्क अध्ययन आवश्यक है। जिससे पता चल सके कि जिनके लिए रचनाएं है उनपर इसका क्या प्रभाव पड़ रहा है। बाल साहित्य में प्रयोगशाला और सूचनात्मक साहित्य को लेकर चर्चा है। डॉ. परशुराम शुक्ल और उनके समकालीन रचनाकार की बाल साहित्य लेकर कितना सजग है। इसका सीधा प्रभाव क्या पड़ा है। मेरे शोध का उद्देश्य इससे संबंधित नवीन जानकारियों का पता लगाना है। जिससे बाल साहित्य भविष्य और चुनौती का सही सही आकलन करने में आसानी हो।

शोध विषय की उपादेयता :-

शिक्षा से ही बालकों का शारीरिक, मानसिक , बौद्धिक, नैतिक एवं चारित्रिक विकास संभव होता है। पाठ्य पुस्तकों से बालक को सीमित ज्ञान ही मिलता है। बाल साहित्य से उसे सहज रूप में जीवन की शिक्षा भी मिलती है। वे अंकुर के रूप में बालमन में बैठ जाते हैं और प्रेरणा देते रहते है। चांद, सुरज जैसे पुराने विषयों पर रचनाकार का नवीन दृष्टिकोण उसे नव्यता प्रदान करता है। हर बालक अपने मन का राजा और हर बालिका अपने मन की रानी होती है। इसलिए राजा, रानी, परियों की रचनाएं बालमन की अनुभूतियों का ही चित्रण है। बालमन की अनुभूतियों का चित्रण ही बाल रचनाकार की सफलता है। हमारे यहां कथा, कहानियों के माध्यम से बच्चों तक पहूंचने की परम्परा रही है। बाल साहित्य के परम्परावादी साहित्यिकारों का मत है कि लोक साहित्य की चमत्कारी चीजों को बाल साहित्य में जगह देना देश की सभ्यता संस्कृति की मजबूती के लिए जरूरी है। वहीं राजकुमार, राजकुमारियां, परीलोक, भूत प्रेत, दानव आदि चीजों से इनके कल्पनाशक्ति का भी विकास होता है। मीडिया और मोबाइल से खतरे में पड़े बालमन को कथा साहित्य के माध्यम से सहारा दिया जा सकता है। शोध के माध्यम से यह समझने की कोशिश होगी कि बाल कथा साहित्य के माध्यम से कैसे हम अपने बच्चों तक कम उम्र में अच्छी चीजें पहुंचाएं। इसके माध्यम से उनके मनोविज्ञान को समझते हुए ही उन्हें नैतिक बातें सिखाई जा सकती हैं, थोथी शिक्षाप्रद कहानियां उनके मन में अरुचि ही पैदा करती हैं।

शोध विषय में प्रयुक्त अध्ययन पद्धतियां :-

शोध प्रविधि :

अधोलिखित शोध कार्य में हिंदी बाल साहित्य में उपलब्ध विभिन्न रचनाओं की मदद लूंगी। खासतौर पर साहित्यकार डॉ. परशुराम शुक्ल रचित बाल साहित्य का अध्ययन करुंगी। इसके लिए मैंने उनकी आधा दर्जन किताबों का चयन किया है। साथ ही पत्र पत्रिकाओं की भी मदद ली जाएगी। शोध प्रबंध में मुख्य रूप से साहित्यिक शोध की समाज शास्त्रीय एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्धतियों का प्रयोग किया जाएगा।

१. सर्वेक्षण विधि
२. साक्षात्कार विधि
३. आलोचनात्मक विधि एवं तुलनात्मक विधि
४. सहायक सामग्री, पुस्तकालय अवलोकन
५. पुस्तकावलोकन
६. इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री

पूर्ववर्ती शोधकार्य :-

१.हिंदी बाल कविता में ने प्रयोग संदर्भ परशुराम शुक्ल – सुधा मिश्रा ; बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय भोपाल, गाइड – डॉ. आभा वाजपेई

२.डॉ. परशुराम शुक्ल के बाल काव्य में कल्पना और यथार्थ – जयश्री अयंगर, उच्च शिक्षा शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा (कर्नाटक शाखा) गाइड – टी. जे. प्रभाशंकर

३.हिंदी बाल कविता में प्रकृति चित्रण परशुराम शुक्ल के संदर्भ में – नीरज कुमार बरोलिया ; जीवाजी विश्वविद्यालय; डॉ. आभा दीक्षित

अध्याय - 1

परशुराम शुक्ल का व्यक्तित्व :-

परिचय –

१.१ सामान्य तथ्य

१.१.१ वंश एवं जन्म

१.१.२ बचपन एवं बचपन की परिस्थितियां

१.१.३ शिक्षा एवं व्यवसाय

१.१.४ विवाह एवं परिवार

१.२ बाह्य व्यक्तित्व

१.२.१ शारीरिक सौष्ठव

१.२.२ वेशभूषा

१.२.३ खानपान

१.२.४ अभिरुचियां

१.२.५ सामान्य व्यवहार

१.३ आंतरिक व्यक्तित्व

१.३.१ विचारधारा

१.३.२ संवेदनशीलता

१.३.३ अनौपचारिक संबंध

१.३.४ संबंधों का निर्वाह

१.३.५ अंतर्मुखी व्यक्तित्व की प्रधानता

मूल्यांकन

अध्याय – 2

परशुराम शुक्ल का रचना संसार

२.१ बाल काव्य

२.२ बाल कहानी

२.३ बाल उपन्यास

२.४ बाल धारावाहिक

२.५ बाल नाटक और नुक्कड़ नाटक

२.६ बालोपयोगी आलेख

२.७ कोश साहित्य

२.८ कहानी

२.९ कविता

२.१० चुटकुले और लघु कथाएं

२.११ ग़ज़ल

२.१२ साहित्य सृजन एवं साहित्यिक उपलब्धियां

मूल्यांकन

अध्याय – 3

परशुराम शुक्ल के बाल कथा साहित्य की समीक्षात्मक अध्ययन

३.१ बाल कहानी

३.१.१ जंगल की बाल कहानियां

३.१.२ प्राचीन ग्रंथों की बाल कहानियां

३.१.३ शिक्षाप्रद बाल कहानियां

३.१.४ परियों की बाल कहानियां

३.१.५ लोक कथाओं पर आधारित बाल कहानियां

३.१.६ राजा रानी की बाल कहानियां

३.१.७ नैतिक बाल कहानियां

३.१.८ प्रेरणादायक बाल कहानियां

३.१.९ पंचतंत्र, हितोपदेश और जातक की बाल कहानियां

३.१.१० ऐतिहासिक बाल कहानियां

३.१.११ क्रान्तिकारियों की बाल कहानियां

३.१.१२ वैज्ञानिक बाल कहानियां

३.१.१३ मनोरंजक एवं ज्ञानवर्धक बाल कहानियां

३.१.१४ बाल विमर्श की कहानियां

३.१.१५ विमुक्त जातियों की लोक कथाएं

मूल्यांकन

अध्याय – 4

४. **बाल उपन्यासः-**

४.१.१ लाल किरण

४.२.२ ख़ज़ाने का रहस्य

अध्याय – 5

अनुभूति के निकष पर परशुराम शुक्ल का बाल कथा साहित्य

५.१ स्वस्थ मनोरंजन

५.२ परोक्ष नैतिक शिक्षा

५.३ ज्ञानवर्धक

५.४ आस्था और विश्वास

५.५ परम्परा और आधुनिकता का समन्वय

५.६ संस्कृति की सुरक्षा

५.७ राष्ट्रभक्ति और देशप्रेम

५.८ श्रम का महत्व

५.९ दया , करुणा तथा परोपकार का महत्व

५.१० प्रेम , सौहार्द और सामंजस्य का महत्व

५.११ व्यक्तिवादी और भौतिकवादी विचारधारा का विरोध

५.१२ आडम्बरों का खण्डन और विरोध

५.१३ विश्वबन्धुत्व की भावना

५.१४ वैज्ञानिक खोजें और आविष्कार

५.१५ वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास

५.१६ वैज्ञानिक आविष्कारों की परिकल्पना एवं परिणति

५.१७ प्रकृति और पर्यावरण का चित्रण

५.१८ पर्यावरण प्रदुषण का विरोध

५.१९ नारी का महत्व

५.२० बच्चों के व्यक्तित्व का संतुलित विकास मूल्यांकन

अध्याय – 6

अभिव्यंजना के निकष पर परशुराम शुक्ल का बाल कथा साहित्य

१.भाषा

२.शैली

३.बिम्ब

४.प्रतीक

५.कहावतें

६.मुहावरे

मूल्यांकन

अध्याय – 7

उपसंहार

६.१ उपलब्धियां

६.२ सीमाएं

६.३ संभावनाएं

मूल्यांकन

संदर्भ ग्रंथ :-

आधार ग्रंथ -

परशुराम शुक्ल का प्रकाशित बाल कथा साहित्य

१.जंगल का बाल कहानियां – विवेक पब्लिशिंग हाउस, जयपुर (राजस्थान) 2015

२.प्राचीन ग्रंथों की बाल कहानियां – विवेक पब्लिशिंग हाउस;2015

३.प्रेरणा दायक बाल कहानियां – विवेक पब्लिशिंग हाउस 2016

४.बाल विमर्श की कहानियां – संजय प्रकाशन, अशोक विहार (दिल्ली) 2021

५.विमुक्त जातियों की लोक कथाएं, आदिवासी लोककला एवं बोली विकास अकादमी, भोपाल 2021

६.वृक्षमानव , सूर्य भारती प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली; 2021

७. शिक्षाप्रद बाल कहानियां – विवेक पब्लिशिंग हाउस, जयपुर (राजस्थान) , 2015

८. परियों की बाल कहानियां – विवेक पब्लिशिंग हाउस, जयपुर 2015

९. लोक कथाओं पर आधारित बाल कहानियां – विवेक पब्लिशिंग हाउस, जयपुर,2015

१०. राजा रानी की बाल कहानियां – विवेक पब्लिशिंग हाउस, जयपुर 2015

११. पंचतंत्र, हितोपदेश और जातक की बाल कहानियां – विवेक पब्लिशिंग हाउस, जयपुर 2016

१२. ऐतिहासिक बाल कहानियां – विवेक पब्लिशिंग हाउस, जयपुर 2016

१३. क्रांतिकारियों की बाल कहानियां – विवेक पब्लिशिंग हाउस, जयपुर 2016

१४. वैज्ञानिक बाल कहानियां – विवेक पब्लिशिंग हाउस, जयपुर 2016

१५. मनोरंजक एवं ज्ञानवर्धक बाल कहानियां – विवेक पब्लिशिंग हाउस, जयपुर 2016

१६. लाल किरण – विज्ञान लोक , अशोक विहार (दिल्ली) 2013

१७. ख़ज़ाने का रहस्य – संजय पब्लिशिंग हाउस, जयपुर 2021

१८. मास्टर दीनदयाल – साहित्य अकादमी, रवीन्द्र भवन, नई दिल्ली,2013

१९. प्रेमचन्द के कारनामे, हिंदुस्तान प्रकाशन, शाहदरा दिल्ली, 2016

२०. नैतिक बाल कहानियां – विवेक पब्लिशिंग हाउस, जयपुर 2016

सहायक ग्रंथ :-

१.शुचिता सेठ, समकालीन हिंदी बाल साहित्य; अंकित पब्लिकेशन (जयपुर) ; 2011

२. एच. बी. बिष्ट; बाल मनोविज्ञान, अग्रवाल पब्लिकेशन; आगरा (उत्तर प्रदेश) 2011

३. राजेन्द्र कुमार शर्मा, समकालीन हिंदी बाल कविता; फाल्गुनी प्रकाशन ; दिल्ली 2015

४. सुधा मिश्रा, हिंदी बाल कविता में नए प्रयोग ; जनवाणी प्रकाशन , दिल्ली 2015

५. प्रियंका गुप्ता; हिंदी बाल साहित्य का परिचयात्मक अध्ययन बुक पब्लिकेशन, लखनऊ 2017

६. प्रणोति पाटिल ; हिंदी बाल साहित्य का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, आशा प्रकाशन, कानपुर

७. छाया राहुल, बुंदेलखंड के साहित्यकारों का साहित्यिक अवदान, आशा प्रकाशन, कानपुर 2013

८.रामशंकर आर्य , हिंदी बाल साहित्य का सैद्धांतिक विवेचन, आराधना ब्रदर्स, कानपुर 2016

९. परशुराम शुक्ल, हिंदी बाल साहित्य का सैद्धांतिक विवेचन, आराधना ब्रदर्स, कानपुर 2016

१०. मनोज कुमार , हिंदी बाल काव्य का मनोविज्ञान अध्ययन, आशा प्रकाशन, कानपुर 2017

११. निर्मला जेना , हिंदी और ओड़िया बाल कविता की तुलनात्मक अध्ययन (परशुराम एवं नंदकिशोर सिंह के विशेष संदर्भ में) आराधना ब्रदर्स, कानपुर 2018

१२. आनंद बक्षी, हिंदी बाल साहित्य का अनुशीलन, आराधना ब्रदर्स कानपुर, 2018

१३. अनीता रानी, परशुराम शुक्ल की बाल कविता में मूल्य, आशा प्रकाशन, कानपुर 2019

१४. कृष्ण शलीन शिशुगीत – सलिला , नीरजा स्मृति बाल साहित्य न्यास सहारनपुर, 2019

१५. माधव राजप्पा मुंड़ाकर , परशुराम शुक्ल के सूचनात्मक बाल साहित्य का अध्ययन, बुक पब्लिकेशन, लखनऊ 2019

१६. नीरज कुमार बरोलिया, परशुराम शुक्ल की बाल कविता में प्रकृति चित्रण, भी. एस. पब्लिसर्ज एण्ड ड्रिब्ट्रीब्यूटर्स दिल्ली 2020

१७. पंकज कुमार, हिंदी बाल कविता की परम्परा में परशुराम शुक्ल का योगदान, बी. एस. पब्लिसर्ज एण्ड ड्रिब्ट्रीब्यूटर्स दिल्ली 2020

१८. छाया श्रीवास्तव, हिंदी बाल कविता की परम्परा में परशुराम शुक्ल का साहित्यिक अवदान, के. एल. पचौरी प्रकाशन, गाजियाबाद,2021

१९. अनुसूर्या अग्रवाल, छत्तीसगढ़ बाल साहित्य परम्परा एवं विकास वैभव प्रकाशन, रामपुर, छत्तीसगढ़ 2021

२०. सैफ अली, परशुराम शुक्ल कृत बाल साहित्य का अनुशीलन, आराधना ब्रदर्स, कानपुर 2021

२१. ऋतिक सिंह, बाल सतसई की उपादेयता, के. एल. पचौरी, प्रकाशन- गाजियाबाद 2021

२२. स्वप्न दीप परमार , परशुराम शुक्ल के बाल काव्य में पर्यावरण एवं वन्य जीव, आशा प्रकाशन, कानपुर 2021

२३. आशीष पांडेय, हरिकृष्ण देवसरे एवं परशुराम शुक्ल का बाल साहित्य, आराधना ब्रदर्स, कानपुर 2021

२४. बर्षा सहदेव एवं भगवान जाधव (सं.) हिंदी बाल साहित्य; सृजन और संदर्भ, ए. आर. पब्लिशिंग कम्पनी, दिल्ली 2022

२५. उषा यादव और राजकिशोर सिंह (सं.) हिंदी बाल साहित्य और बाल विमर्श सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली 2018

२६. हरिकृष्ण देवसरे, हिंदी बाल साहित्य : एक अध्ययन; आत्माराम एण्ड संस दिल्ली, 1969

२७. परशुराम शुक्ल, बाल साहित्य: व्यक्तित्व विकास और जीवन मूल्य; सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली 2023

२८. विकास दुबे और विभा शुक्ल (सं.) परशुराम शुक्ल बाल साहित्य रचनावली (11 खण्ड) , जनवाणी प्रकाशन, दिल्ली 2023

२९. कृष्णदत्त शर्मा, (मार्गदर्शन), विजय बहादुर सिंह (प्राक्कथन), और परशुराम शुक्ल (सं.) , परशुराम शुक्ल वांग्मय, अनामिका पब्लिशर्स एण्ड ड्रिब्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2021- 23

३०. सरोज शर्मा, परशुराम शुक्ल के बाल काव्य में पर्यावरण संरक्षण, श्वेतवर्णा प्रकाशन, नई दिल्ली,2023

३१. डॉक्टर आर. एम. जाधव , डॉ. भगवान जाधव और डॉ. मुकुंद कपड़े, (सं.) हिंदी बाल साहित्य; विविध आयाम, ए. आर. पब्लिशिंग कम्पनी, दिल्ली,2023

३२. धीरेन्द्र वर्मा (प्रधान संपादक) हिंदी साहित्य कोश (दो खण्ड), ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी 2015